International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 37-39

अपने-अपने अजनबी उपन्यास में वैचारिक वातावरण

डॉ. बिउटी दास

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, छैगांव कॉलेज, असम, भारत।

सारांश

अज्ञेय कृत उपन्यास अपने-अपने अजनबी एक अस्तित्ववादी उपन्यास है। उपन्यास में दो विदेशी केन्द्रीय पात्र सेल्मा और योके के माध्यम से उपन्यासकार ने पात्रों के अंतर्द्वन्द, अकेलापन, मृत्युभय, आस्था-अनास्था आदि आतंरिक भावनाओं का सुन्दर रूप से अभिव्यक्त किया है। आधुनिक युग में सबसे बड़ी विड़म्बना यह है कि हम साथ होते हुए भी आतंरिक रूप से बहुत अकेले होते हैं। करीब रहकर भी एक-दूसरे को समझ नहीं पाते हैं, एक-दूसरे के अजनबी बने रहते हैं। वर्तमान युग के वैचारिक क्षेत्र में आज काफी बदलाव आये। अत्याधुनिकता के भीड़-भाड़ में फँसकर न जाने हम कब कितने स्वार्थी बन गये। आवश्यकता से ज्यादा व्यवसायिक मुनाफाओं के बारे में हरपल सोचते हैं। अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए ज्यादा जागरूक रहते हैं, प्रतियोगिता की भावनाओं ने हमें एक यन्त्र के रूप में परिवर्तित कर दिया है। दूसरों के अस्तित्व की मूल्य हमारे जीवन मूल्य के आगे फीके पड़ गए हैं। निजीत्व की भावनाओं के कारण हमारे भीतर के सद्वृत्तियॉ प्रायः कम होता चला गया है। पारम्परिक सद्भावना, सहृदयता, प्रेम, दया, ममता जो हमारे जीवन के अपरिहार्य अंग थे आज हमारे मानसिकता में इतने द्रुत परिवर्तन हो गए है कि हमारे जीवन में इन सब सदवृत्तियों की अस्तित्व की असली पहचान करना दराचलत: अपने-अपने अजनबी उपन्यास की मूल संवेदना है।

मूल शब्द : अस्तित्व, आस्था-अनास्था, विदेशी वातावरण, प्रकृति, समतुल्य वातावरण।

प्रस्तावना

अपने-अपने अजनबी सम्पूर्ण विदेशी पृष्ठभूमि में रचित एक सफल औपन्यासिक कृति है। यहाँ पौर्वात्य और पाश्चात्य दो भिन्न संस्कृति के प्रतीक आस्था और अनास्था को मुख्य विषय के रूप में रखकर पात्रों के बीच की सूक्ष्म वैचारिक द्वन्द को एक समतुल्य वातावरण के माध्यम से अज्ञेय ने प्रस्तुत उपन्यास में सफल अभिव्यक्ति की है। भारतीय दर्शन आस्था पर आधारित है। मृत्यु को जीवन की अंतिम बिंदु न मानकर एक नवीन महाजागतिक जीवन की ओर प्रवेश में विश्वास रखते हैं। इसलिए भारतीय लोग मृत्यु को खुले और शांत हृदय से वरण करने की क्षमता रखते हैं। साधारणतः ईश्वर के प्रति आस्थावादी लोग उनके जीवन पर ऐश्वरीक शक्ति के प्रभाव पर विश्वास रखते हैं, इसलिए रात्रि के समय में भी इन लोगों के मन में भय-भावना का इतना गहरा असर नहीं पड़ता जितना कि अनास्थावादी लोग दिन के उजाले की अपेक्षा रात्रि के समय में भयभीत हो जाते हैं। हर पल उन्हें एक अजीव सा डरावना लगा रहता हैं। अज्ञेय एक सफल उपन्यासकार हैं। अपने-अपने अजनवी उपन्यास की खासियत यह हैं कि उन्होंने सेल्मा और योके पात्र को दिन और रात के अनुभव से परे रखकर एक ऐसी समतुल्य वातावरण में जंहा बर्फ के घर में आवृत कर दोनों पात्र के अंतर्द्वन्द को उपस्थापन किया है।

योके की मनःस्थितियों के माध्यम से पाठक उस वातावरण से भलीभाँति परिचित हो उठते हैं यथा निम्नलिखित उदाहरण इसकी पुस्टि करता है-

> "लेकिन मैं जहा हूँ क्या सूर्य वहाँ सचमुच नहीं है ? क्या काल वहाँ सचमुच नहीं है ? क्या दावे से ऐसा न कह सकना ही मेरी यहाँ की समस्या नहीं है ? मैं मानो एक काल- निरपेक्ष क्षण में तंगी हुई हूँ- वह क्षण काल की लड़ी में से टूटकर कहीं छिटक गया है और इस तरह अंतहीन हो गया है- अंतहीन और अर्थहीन।"
>
> [अ.अ.अ.- पृष्ठा-१६]

दोनों पात्रों के विचार, दर्शन में भिन्नता है। योके युवा है, मृत्यु को जीवन की समाप्ति मानते है, मृत्यु के आगे जीवन, आत्मा, परमात्मा इन सब का कोई अर्थ नहीं है. इसलिए वह हरपल मृत्यु भय से आक्रांत है, जीवन को खुले रूप से भोग करने के बदले पल पल मृत्यु का क्षण गिनती है। दूसरी ओर बृद्धा सेल्मा जो कि कैंसर जैसे खतरनाक बीमारियों से लड़ रही है, मृत्यु उसके दस्तक पर खड़ी है फिर भी वह जीवन की भरपूर आनंद लुटा रहे हैं। मृत्यु क़ो सच्चे हृदय से स्वागत करने के लिए तैयार है, क्योंकि ईश्वर की सत्ता का अनुभव करने के लिए अनिवार्य है मृत्यु से पहचान कर लेना, इसमें ही भारतीय दर्शन की आस्था समाहित है, यही भारतीय दर्शन की विशेषताएँ है, जिसप्रकार लोग मलिन वस्त्र क़ो उतारकर नए वस्त्र परिधान करते हैं ठीक उसीप्रकार जीवात्मा भी परमात्मा में विलीन होने में आस्था रखते हैं। जिसप्रकार पतझड़ के समय पेड़ से पुराने पत्ते गिरकर उसमें नए पत्ते अंकुरित होते हैं ठीक उसी प्रकार किसी के मृत्यु में ही नवीन सृजन का स्वरुप विद्यमान रहता है। दोनों पात्रों के इस विचारगत भिन्नता क़ो प्रस्तुत उपन्यास में इसप्रकार अभिव्यक्त उपन्यासकार ने किया है। यथा –

> "हाँ योके, मैं भगवान क़ो ओढ़ लेना ही चाहती हूँ। पूरा ओढ़ लेना कि कहीं कुछ भी उघड़ा रह न जाये। तुम नहीं जानती जिसे माला की मणि तक नहीं पहुँचना है उसके लिए एक-एक मनके का रूप कितना दिव्य होता है।"
>
> [अ.अ.अ.- पृष्ठा-३३]

सेल्मा के विचार से बिलकुल विपरीत योके जीवन-मृत्यु के संबंध में इस प्रकार विचार व्यक्त करते है -

> "मृत्यु एक झूठ है, क्योंकि वह जीवन का खंडन है। औऱ मैं जीती हूँ औऱ जानती हूँ की मैं जीती हूँ। कभी ऐसा होगा कि जीती न रहूँगी- लेकिन जब नहीं रहूँगी तब जानने वाला भी कौन रहेगा कि मैं जीवित नहीं हूँ कि मैं मर चुकी हूँ ? मौत दूसरों की ही हों सकती है, जिनका होना औऱ न होना दोनों ही हम जान सकते हैं-या मानते हैं। लेकिन अपनी मृत्यु का क्या मतलब है ? वह केवल दूसरे क़ो देखकर लगाया हुआ एक अनुमान है- कि दूसरे के साथ ऐसा हुआ इसलिए हमारे साथ भी होगा।"
>
> [अ.अ.अ.- पृष्ठा-४१]

एक सफल रचना में इस बात की अहमियत दी जाती है कि रचनाकार द्वारा अनुभूत विचार क़ो सम्प्रेषित करने के लिए तदनुरूप वातावरण का सही उपयोग हुआ है या नहीं ? पाठक समुदाय स्वाभाविक रूप से उस वातावरण के साथ एकात्म हों पाए या नहीं ? जिस वातावरण में पात्रों का चित्रण किया गया है पाठक सही ढंग से आस्वादन करने में सक्षम हुए या नहीं ? उपन्यासकार अज्ञेय ने दो भिन्न दार्शनिक विचारधारा क़ो अभिव्यक्त करने के लिए एक ऐसे वातावरण का सहारा लिया है जहाँ समय की अवधारणा से दोनों पात्र परे हैं । दोनों के विचारों में तर्क है, दर्शन है, अपनी-अपनी दृश्टिकोण है । अज्ञेय ने दो विरोधी विचारधाराओं क़ो समतुल्य वातावरण में अपनी-अपनी तर्क रखने की खुली आजादी दी रखी है । उन्होंने किसी एक दर्शन क़ो एक के ऊपर हावी होने नहीं दिए, एक प्रत्यक्षदर्शी की भाँति उपन्यासकार ने पात्रों के द्वन्द क़ो बिना पक्षपातित्व से अनुभव करने का प्रयास किया है । औऱ सबसे बड़ी बात यह है की उपन्यासकार ने ऐसे वातावरण के निर्माण में सिद्धहस्त है जंहा पाठक स्वंय पात्रों के द्वन्द क़ो अपनी ड्रिस्ट्रिकोणों से विचार विश्लेषण करने की खुली आजादी का अनुभव करते हैं ।

एक अनाकांक्षित वातावरण में दोनों पात्रों का एक साथ समय बिताने के मजबूर स्थिति का जिस ढंग से उपन्यासकार ने चित्रण किया है तथा उस समय दोनों पात्रों के वैचारिक चिंतन की गहनतम बोध पाठक क़ो सहज ही उस गंभीर वातावरण के साथ घनिष्ठ बना देते हैं । एक सेल्मा जो की बीमार से पीड़ित हैं, जीवन की अंतिम दिनों क़ो वह अकेली रहना चाहती थी, कोई उसके पास भी न रहे, लेकिन जीवन में इतनी स्वतंत्रता कहाँ हैं कि स्वतंत्रता क़ो स्वंय चुन सके ? मृत्यु का स्वंय वरण करे ? सेल्मा के इस विचार का उपन्यासकार ने इस ढंग से अभिव्यक्त किया हैं- यथा

"मेरी बीमारी कि बात बार-बार दोहराने कि जरुरत नहीं हैं- मैं जानती हूँ कि मैं बीमार हूँ । मैं क्या जान- बुझकर हुई हूँ, या कि तुम्हे सताने के लिए बीमार हुई हूँ ? औऱ स्वतन्त्रता-कौन स्वतंत्र है ? कौन चुन सकता है कि वह कैसे रहेगा, या नहीं रहेगा ? मैं क्या स्वतंत्र हूँ कि बीमार न रहूँ - या कि अब बीमार हूँ तो क्या इतनी भी स्वतंत्र हूँ कि मर जाऊँ ? मैंने चाहा था कि अंतिम दिनों में कोई मैरे पास न हों । लेकिन वह भी क्या मैं चुन सकी ? तुम क्या समझती हों कि इससे मुझे तकलीफ नहीं होती कि जो मैं अपनों क़ो भी नहीं दिखाना चाहती थी उसे देखने के लिए भगवान ने -एक- एक अजनबी भेज दिया ?"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-३६]

कैंसर से पीड़ित सेल्मा मृत्यु के सन्निकट पहुँचकर भी जीवन का उद्यापन करती है, नए वर्ष के स्वागत में उल्लास के गीत गाती है.... योके यह सब देख-देखकर स्वयं क़ो ज्यादा पीड़ित, लाचार समझती है । वह किसी भी प्रकार इससे मुक्त होना चाहती है परन्तु परिस्थितियाँ ऐसी नहीं है कि उससे मुक्त होने की स्वतंत्रता रखे । बर्फ से आवृत घर योके के लिए कब्रघर से किसी भी प्रकार कम नहीं है । अपनी इस मौत की सन्नाटे के वातावरण से अपने आपक़ो छुटकारा पाने के लिए वह डायरी का सहारा लेती है। दिन-प्रतिदिन की घटनाएँ, आतंरिक अंतर्द्व्न्द के उलझन से खोयी योके अपनी विचार इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं-

"कब्रगाह के अंदर आग का लाल प्रकाश- क्या यही नरक की आग है ? आज मैं एकाएक आंटी से यही पूछ बैठी । मैंने कहा, इस लाल-लाल आग को देखकर लगता है की शैतान अभी चिमनी के भीतर से उतरकर कब्र में आ जायेगा हमसे हिसाब करने ।"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-२१]

प्रकृति और मनुष्य के बीच एक ओत:प्रोत समबन्ध है । प्रकृति में ही मनुष्य के प्राण अंतर्निहित है । उसके आगे मनुष्य कितने विवश, लाचार होती है उसका यथार्थ चित्रण हमें अपने-अपने अजनबी उपन्यास में देखने को मिलते है । एक सुंदर प्राकृतिक वातावरण में सेल्मा, यान और फोटोग्राफर की दुकाने चलती है। स्वाभाविक रूप से जीवन आगे बढ़ती है लेकिन अचानक हुए प्राकृतिक वातावरण के परिवर्तन ने सभी के जीवन को झोंकझोड़ कर देते है । अपने-अपने अजनबी उपन्यास में अज्ञेय ने प्रत्यावर्तन शैली के माध्यम से सेल्मा के विगत जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है, जहाँ उस वातावरण के साथ पाठक आदी हो जाते हैं अचानक आये बाढ़ और भूकंप के आफत ने लोगों की जीवन शैली को किस प्रकार प्रभावित कर रख दिया है । सेल्मा, यान और फोटोग्राफर के चरित्र चित्रण के माध्यम से अज्ञेय ने दुर्योगकालीन वातावरण का एक वास्तविक प्रतिच्छवि प्रतिफलित करने का प्रयास किया है । सेल्मा इतनी स्वार्थी बन जाती है कि उनके स्वार्थ के आगे किसी के जीवन मूल्य की कोई महत्व नहीं है, यहाँ तक कि फोटोग्राफर सेल्मा से पीने के लिए पानी माँगने आते हैं फिर भी सेल्मा एक बून्द पानी देने के लिए भी तैयार नहीं है और फोटोग्राफर दूषित पानी पिकर बीमार पड़ जाता है । परिस्थिति से लाचार फोटोग्राफर अंत में पानी में कूदकर अपनी जान गवा देते हैं । दूसरी ओर इसके बिलकुल विपरीत चरित्र यान जीवन-मृत्यु की इस भयानक परिस्थितियों में भी सेल्मा की दूकान से खरीदी हुई मांस जो की उसके जीवन की अन्तिम पूजी देकर ख़रीदा गया था उसको साँझा करने के लिए वह सेल्मा के पास आते हैं।

"अपनी अंतिम पूँजी देकर यह अन्तिम भोजन मैंने खरीदा है । इसे अकेला नहीं खा सकूँगा । और इसे पकाना भी कुछ आसान नहीं था- फोटोग्राफर की जली हुई दुकान की आँच पर ही यह पका है । इसे जरूर ही बहुत स्वादु होना चाहिए- मेरे जीवन के मोल यह ख़रीदा गया और फोटोग्राफर के जीवन के मोल पक सका। लो-"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-६७]

इस प्रकार हम देखते हैं कि सेल्मा, यान और फोटोग्राफर इन तीनों पात्रों की विचारगत भिन्नता को अज्ञेय ने प्रस्तुत उपन्यास में सुंदर अभिव्यक्ति की है। एक कस्बे में ही तीनों के दुकान होने पर भी सेल्मा उन लोगों के साथ अजनबीपन का ही व्यवहार करते हैं । यहाँ तक कि आँखों के सामने फोटोग्राफर की मृत्यु को देखकर भी सेल्मा के हृदय में कोई पश्चातव की भावना का अंकुश नहीं होता हालाँकि इन विषम परिस्थितियों में वह केवल व्यवसायिक मुनाफाओं के बारे में ही सोचती है । फोटोग्राफर एक साधारण दुकानदार है, बिगड़ती हुई परिस्थितिओं ने उसको इतना जकड़ कर रख दिया है कि वह कुछ सामान खरीदने की स्थिति में नहीं है । ऐसी हालत में सेल्मा जान-बुझकर पीने का पानी माँगने गए फोटोग्राफर को बदले में उसकी दुकान की चाय पीने का ही नसीहत देती है । उस समय फोटोग्राफर कोई विद्वेष भाव न दिखाकर बिलकुल शांत और संयमता का परिचय दिया- यथा

"नहीं, तब तुम्हे तकलीफ नहीं दूँगा ।चाय तो नदी के पानी में भी बन सकती है- एक बार उबल जाये तब कोई डर तो नहीं रहेगा ।"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-५७]

यान के चरित्र में इतनी विशिस्टताएँ है की सेल्मा जैसी हृदयहीन युवती भी यान के व्यवहार के आगे नतमस्तक होना पड़ा और काल के प्रवाह में स्वार्थी सेल्मा का हृदय परिवर्तन हो जाता है । वह सारी की सारी सम्पत्ति यान के नाम कर देती है परन्तु यान उसकी वसीयत नामा को स्वीकार नहीं करती है । दराचलतः यान अपनी आदर्श, विचार, चिंतन के आगे किसी के सामने झुकना पसंद नहीं करते । अपनी प्रमूल्यबोध पर अटल यान की अपनी वैचारिक चिंतन निम्नलिखित उदाहरण से पुस्टि होती है-

"मरेगा तो शायद हम दोनों में से कोई नहीं- तुम्हारी हरकत के बाबजूद अभी तो नहीं

लगता कि मैं मरनेवाला हूँ। लेकिन अगर सचमुच यह बाढ़ ऐसी ही इतने दिनों तक रही कि मैं भूखा मर जाऊँ, तो तुम बचकर कहाँ जाओगी और अगर पीछे ही मरोगी, तो तुम समझती हो की वैसे अकेले मरने में कोई बड़ा सुख है ? बल्कि अकेली तो तुम अब भी हो, जबकि मैं नहीं हूँ। और शायद मर ही चुकी हो- जब कि मैं अभी जिन्दा हूँ।"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-६६]

अपने-अपने अजनबी उपन्यास में अज्ञेय ने युद्धकालीन वातावरण के परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न लोगों के बीच की शंका, भय, आतंक, कायरता आदि मन:स्थितियों का एक यथार्थ प्रतिच्छवि दिखाने का प्रयत्न किया है। किसी भी सभ्य राष्ट्र एवं देश के लिए यह कदाचित उचित नहीं है। युद्ध की भयावहता के फलस्वरूप किस प्रकार दैनन्दिन जीवन शैली में वदलाव आये, लोग अपने ही घर के चार दीवारिओं से बाहर कदम रखने के लिए झिझकते हैं, भीषण खाद्य संकट में आम इंसान का जीवन संग्राम, राचन के दुकान की लम्बी भीड़ में भी एक प्रकार अजनबी चेहरे, मुद्राओं से आतंकित होना, जर्मन सैनिकों द्वारा योके का बलात्कार आदि परिस्थितिओं से एकप्रकार पाठक तत्कालीन युद्ध की भयावहता का एक जीताजागता प्रतिच्छवि प्रत्यक्ष करता है।

"भीड़ बहूत थी, लेकिन प्रतियोगी भाव के अलावा भी भीड़ में सब अकेले थे। बुझे हूए बन्द चेहरे, मानो घर की खिड़कियाँ ही बन्द न कर ली गयी हों बल्कि परदे भी खींच दिए गए हो; दबी हूई भावनाहीन पर निर्मम आवाजें, मानो जो माँगती हों, उसे जंजीर से बांध लेना चाहती हों। अजनबी चेहरे, अजनबी आवाजें, अजनबी मुद्राएं, और वह अजनबीपन केवल एक- दूसरे को दूर रखकर उससे बचने का ही नहीं, बल्कि एक- दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने की असमर्थता का भी है- जातियों और संस्कारों का अजनबीपन, जीवन के मूल्य का अजनबीपन।"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-८१,८२]

भारतीय लोगों के लिए जगन्नाथ एक पवित्र स्थान है। जीवन के अंतिम समय में जगन्नाथ का दर्शन करना ईश्वर दर्शन के बराबर माना जाता है। यही आस्था की भावना दराचलतः भारतीय दर्शन की विशेषताएँ हैं। अज्ञेय ने प्रस्तुत उपन्यास की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि विदेशी वातावरण के परिप्रेक्ष्य में रखकर किया है। उन्होंने सेल्मा और योके दोनों पात्रों को आस्था- अनास्था के द्वन्द के तजुर्बे में अपनी-अपनी विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है। अंत में अनास्थावादी योके आस्थावादी सेल्मा के तर्क के आगे अपने आपको समर्पित होने के लिए बाध्य हो जाते हैं। चूँकि उपन्यासकार के लिए यह सम्भव नहीं है कि प्रस्तुत उपन्यास के अनास्थावादी पात्र योके को उस हालत में जगन्नाथ के चरण में खींचकर लाये। इसलिए प्रस्तुत उपन्यास के एक ही प्रतीकी भारतीय पात्र जगन्नाथन के गोद में योके जहर पान कर अपनी मृत्यु का स्वेच्छा से वरण करने की स्वतंत्रता दिखाकर पाश्चात्य अनास्था का पौर्वात्य आस्था के सामने समर्पित होना दिखाया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में अज्ञेय ने वातावरण सृजन की अपेक्षा पात्रों के चिंतन, दर्शन, विचार, अनुभूतिओं की मौलिकता को ज्यादा अहमियत दिया है। जर्मन सैनिको के द्वारा बलात्कार हुए योके के उस विक्षिप्त अवस्था में भी वह अपनी तर्क, विचार पर अटल रहते हैं।

"कह दूँगी कि मैंने चुना, स्वेच्छा से चुना। सब कुछ कह दूँगी। सारी हरामी दुनिया को बता दूँगी कि एक बार मैंने अपने मन से जो चुना वही किया। हरामी-हरामी दुनिया ! नाथन- अच्छे आदमी- मुझे माफ कर दो!"

[अ.अ.अ.- पृष्ठा-८६]

निष्कर्ष

अज्ञेय कृत अपने-अपने अजनबी मूलतः एक विचारप्रधान अस्तित्ववादी उपन्यास है। अस्तित्व के संकट से भोगे हुए पात्रों की मनःस्थितियों का यँहा सुंदर आंकलन किया है। मैं कौन हूँ *?* मेरा अस्तित्व क्या है *?* इस मैं पन के अस्तित्व की बोध करना उपन्यास का मूल केंद्र बिंदु है। एक सहृदय पाठक के नाते एक सवाल बार-बार मन में उठते हैं कि ऐसी क्या स्थिति थी कि अज्ञेय एक भारतीय उपन्यासकार होने के वावजूद भी विदेशी वातावरण और विदेशी पात्रों को *(*एक के सिवाय*)* क्यों चुना है *?* क्या भारतीय वातावरण में आस्था और अनास्था के द्वन्द को उपस्थापन नहीं किया जा सकता था *?* हमारी दृष्टि में सम्भबत*:* अज्ञेय ने भारतीय पृष्ठभूमि में उपन्यास की संरचना कर आस्थावाद को अनास्थावाद के ऊपर विजय प्राप्त कराना नहीं चाहते थे। साधारणतः लोगों की अपनी निजी जगह के प्रति एकप्रकार की आकर्षण एवं उसके प्रति एक विशेष दुर्वलताये बराबर बनी रहती है लेकिन अज्ञेय ने उपन्यास में कहीं भी हमें यह कोशिश करता हुआ नहीं मिला। अपनी भूमि की हवा, पानी से बिलकुल दूर रहकर जानबुझकर ही शायद विदेशी भूमि में दोनों पात्रों के अंतर्द्वन्द को उपस्थापन किया है ताकि वह तटस्थ भाव से पात्रों के साथ न्याय कर सके। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अपने-अपने अजनबी उपन्यास में वैचारिक चिंतन का प्रभाव इतना गहरा है कि साधारण पाठक के लिए निश्चित रूप से प्रस्तुत उपन्यास को समझना बोझिल है। इसके लिए पाठक में मौलिक चिंतन की गंभीरता के साथ-साथ अनुभूति की गहराई की आवश्यकता है। नए संवेदना के अन्वेषक, आधुनिक बोध के युगद्रस्टा उपन्यासकार अज्ञेय अपनी अद्वितीय रचनात्मक ऊर्जा के लिए विश्व साहित्य में अलग व्यक्तित्व के रूप में परिचित है। हमारी दृष्टि में वह एक व्यक्ति की अपेक्षा एक अनुष्ठान है।

संदर्भ

1. सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, अपने-अपने अजनबी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९६१.
2. डॉ. रामेश्वर बांगड़, युगपुरुष कवि अज्ञेय, विद्या प्रकाशन, २००६.
3. डॉ. दंगल. झालते, नए उपन्यासों में नए प्रयोग, प्रभात प्रकाशन, १९१४.
4. डॉ. ज्वाला प्रसाद. खेतान, अज्ञेय शिखर अनुभूतियाँ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९९९.
5. डॉ. देव कृष्ण. मौर्य, उपन्यास शिल्पी अज्ञेय, शैलजा प्रकाशन, २००६.
6. डॉ. शंकर वसंत. मुद्गल, अज्ञेय का काव्य-भाव एवं शिल्प, अमन प्रकाशन, १९९८.